

253. येह सब रसूल (जो हम ने मबऊस फ़रमाए) हमने इनमें से बा'ज को बा'ज पर फ़ज़ीलत दी है, इनमें से किसी से अल्लाहने (बराहे रास्त) कलाम फ़रमाया और किसी को दरजातमें (सब पर) फ़ौक़ियत दी (या'नी हुजूर नबिय्ये अकरम ﷺ को जुमला दरजातमें सब पर बुलन्दी अता फ़रमाई), और हमने मरयम के फ़रज़न्द ईसा (عليه السلام) को वाज़ेह निशानियां अता कीं और हमने पाकीज़ा

रूह के ज़रीए उस की मदद फ़रमाई, और अगर अल्लाह चाहता तो उन रसूलों के पीछे आनेवाले लोग अपने पास खुली निशानियां आ जाने के बाद आपस में कभी भी न लडते झगडते मगर उन्होंने (इस आज़ादाना तौफ़ीक के बाइस जो उन्हें अपने किए पर अल्लाह के हुजूर जवाब देह होने केलिए दी गई थी) इख़िलाफ़ किया पस उनमें से कुछ ईमान लाए और उन में से कुछने कुफ़र इख़्तियार किया, (और येह बात याद रखो कि) अगर अल्लाह चाहता (या'नी उन्हें एक ही बात पर मजबूर रखता) तो वोह कभी भी बाहम न लडते, लेकिन अल्लाह जो चाहता है करता है।

254. ऐ ईमानवालो ! जो कुछ हमने तुम्हें अता किया है उसमें से (अल्लाह की राहमें) खर्च करो कब्ल इस के कि वोह दिन आ जाए जिस में न कोई खरीदो फ़रोख़्त होगी और (काफ़िरों के लिए) न कोई दोस्ती (कार आमद) होगी और न (कोई) सिफ़ारिश, और येह कुफ़ार ही ज़ालिम है।

255. अल्लाह, उसके सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, हमेशा ज़िन्दा रहनेवाला है (सारे अलम को अपनी तदबीर से) काइम रखनेवाला है, न उस को ऊंच आती है और न नींद, जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब उसीका है, कौन ऐसा शख़्स है जो उस के हुजूर उस के इज़्ज के बिग़ैर सिफ़ारिश कर सके, जो कुछ

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ
عَلَى بَعْضٍ مِنْهُمْ مَنْ كَلَّمَ اللَّهُ
وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجَاتٍ وَاتَّيْنَا
عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيْتِ وَأَيَّدْنَاهُ
بِرُوحِ الْقُدُسِ ۖ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا
أَفْتَلَكُمُ الَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ مِنْ
بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَاتُ وَلَكِنْ
اِخْتَلَفُوا فِيهِمْ مَنْ آمَنَ وَمِنْهُمْ مَنْ
كَفَرَ ۖ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَفْتَلْنَا
وَلَكِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ﴿٢٥٣﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِمَّا
رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمْ يَوْمٌ لَا
بِيعَ فِيهِ وَلَا خُلَّةٌ وَلَا شَفَاعَةٌ ۗ
وَالْكَافِرُونَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٥٤﴾
اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ۗ
لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ ۗ لَهُ مَا فِي
السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ مَنْ ذَا
الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۗ
يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۗ

मख्लूक़ात के सामने (हो रहा है या हो चुका) है और जो कुछ उनके बाद (होनेवाला) है (वोह) सब जानता है, और वोह उसकी मा'लूमामत में से किसी चीज़ का भी अहाता नहीं कर सकते मगर जिस क़दर वोह चाहे, उसकी कुरसी (सल्लतनतो क़ुदरत) तमाम आस्मानों और ज़मीन को मुहीत है, और उस पर उन दोनों (या'नी ज़मीनो आस्मान) की हिफ़ाज़त हरगिज़ दुश्वार नहीं, वोही सब से बुलंद रुत्बा बड़ी अज़मतवाला है।

256. दीन में कोई ज़बरदस्ती नहीं, बेशक हिदायत गुमराही से वाज़ेह तौर पर मुमताज़ हो चुकी है, सो जो कोई मा'बूदाने बातिला का इन्कार कर दे और अल्लाह पर ईमान ले आए तो उसने एक ऐसा मज़बूत हलक़ा थाम लिया जिस के लिए टूटना (मुम्किन) नहीं, और अल्लाह ख़ूब सुननेवाला जाननेवाला है।

257. अल्लाह ईमानवालों का कारसाज़ है वोह उन्हें तारीकियों से निकाल कर नूर की तरफ़ ले जाता है, और जो लोग काफ़िर हैं उन के हिमायती शैतान हैं वोह उन्हें (हक़ की) रौशनी से निकाल कर (बातिल की) तारीकियों की तरफ़ ले जाते हैं, येही लोग जहन्नमी हैं वोह उसमें हमेशा रहेंगे।

258. (ऐ हबीब!) क्या आपने उस शख्स को नहीं देखा जो इस वजह से कि अल्लाह ने उसे सल्लतनत दी थी इब्राहीम (عليه السلام) से (खुद) अपने रब (ही) के बारेमें झगड़ा करने लगा, जब इब्राहीम (عليه السلام) ने कहा : मेरा रब वोह है जो जिन्दा (भी) करता है और मारता (भी) है तो (जवाबन)

وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ﴿٢٥٥﴾

لَا إِكْرَاهَ فِي الدِّينِ قَدْ تَبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ فَمَنْ يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِنْ بِاللَّهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ لَا انْفِصَامَ لَهَا وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٥٦﴾
 اللَّهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا لَا يُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَوْلِيَاهُمُ الطَّاغُوتُ لَا يُخْرِجُوهُمْ مِّنَ النُّورِ إِلَى الظُّلُمَاتِ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٥٧﴾

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِي حَاجَّ إِبْرَاهِيمَ فِي رَبِّهِ أَنْ آتَاهُ اللَّهُ الْمُلْكَ إِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّيَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ قَالَ إِبْرَاهِيمُ

केहने लगा : मैं (भी) जिन्दा करता हूँ और मारता हूँ, इब्राहीम (عليه السلام) ने कहा : बेशक अल्लाह सूरज को मशरिक की तरफ से निकालता है तू उसे मगरिब की तरफ से निकाल ला। सो वोह काफिर देहशत ज़दह हो गया, और अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हक़ की राह नहीं दिखाता।

259. या इसी तरह उस शख्स को (नहीं देखा) जो एक बस्ती पर से गुज़रा जो अपनी छतों पर गिरी पड़ी थी तो उसने कहा कि अल्लाह उस की मौत के बाद उसे कैसे जिन्दा फ़रमाएगा सो (अपनी कुदरत का मुशाहिदह कराने के लिए) अल्लाहने उसे सौ बरस तक मुर्दा रखा फिर उसे जिन्दा किया, (बा'द अज़ां) पूछा तू यहां (मरने के बा'द) कितनी देर ठेहरा रहा (है)? उसने कहा : मैं एक दिन या एक दिन का (भी) कुछ हिस्सा ठेहरा हूँ, फ़रमाया : (नहीं) बल्कि तू सौ बरस पड़ा रहा है) पस (अब) तू अपने खाने और पीने (की चीज़ों) को देख (वोह) मुतगय्यिर (बासी) भी नहीं हुई और (अब) अपने गधे की तरफ नज़र कर (जिसकी हड्डियां भी सलामत नहीं रहीं) और येह इस लिए कि हम तुझे लोगों के लिए (अपनी कुदरत की) निशानी बना दें और (अब उन) हड्डियों की तरफ देख हम उन्हें कैसे जुंबिश देते (और उठाते) हैं फिर उन्हें गोश्त (का लिबास) पेहनाते हैं, जब येह (मुआमला) उस पर ख़ूब आश्कार हो गया तो बोल उठा : मैं (मुशाहिदाती यक़ीन से) जान गया हूँ कि बेशक अल्लाह हर चीज़ पर ख़ूब क़ादिर है।

260. और (वोह वाक़िआ भी याद करें) जब इब्राहीम (عليه السلام) ने अर्ज़ किया : मेरे रब ! मुझे दिखा दे कि तू मुर्दों को किस तरह जिन्दा फ़रमाता है ? इर्शाद हुवा : क्या तुम यक़ीन नहीं रखते? उसने अर्ज़ किया : क्यूं नहीं (यक़ीन

فَإِنَّ اللَّهَ يَأْتِي بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ
فَأَتِيهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِينَ
كَفَرُوا وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الظَّالِمِينَ ﴿٢٥٨﴾

أَوْ كَالَّذِي مَرَّ عَلَى قَرْيَةٍ وَهِيَ خَاوِيَةٌ
عَلَى عُرُوشِهَا قَالَ أَنَّى يُحْيِي هَذِهِ
اللَّهُ بَعْدَ مَوْتِهَا فَأَمَاتَهُ اللَّهُ مِائَةً
عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ ۖ قَالَ كَمْ لَبِثْتُ ۖ
قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۖ
قَالَ بَلْ لَبِثْتُ مِائَةً عَامٍ فَانظُرْ
إِلَى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۖ
وَأَنْظُرْ إِلَى حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَ آيَةً
لِّلنَّاسِ وَأَنْظُرْ إِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ
نُنشِرُهَا ثُمَّ نَكْسُوهَا لَحْمًا ۖ فَلَمَّا
تَبَيَّنَ لَهُ ۖ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٥٩﴾

وَأَذَقْنَا لِرَبِّهِمْ رَبِّ آرِنِي كَيْفَ
تُحْيِي الْمَوْتَى ۖ قَالَ أَوْلَمْ تُؤْمِنُوا ۖ
قَالَ بَلَىٰ وَلَكِنْ لِيَطْمَئِنَّ قُلُوبِي ۖ

रखता हूँ) लेकिन (चाहता हूँ कि) मेरे दिल को भी खूब सुकून नसीब हो जाए, इशाद फ़रमाया : सो तुम चार परिन्दे पकड़ लो फिर उन्हें अपनी तरफ़ मानूस कर लो फिर (उन्हें ज़ब्द कर के) उन का एक एक टुकड़ा एक एक पहाड़ पर रख दो फिर उन्हें बुलाओ वोह तुम्हारे पास दौड़ते हुए आ जाएंगे, और जान लो कि यकीनन अल्लाह बड़ा ग़ालिब बड़ी हिक्मतवाला है।

261. जो लोग अल्लाह की राहमें अपने माल खर्च करते हैं, उनकी मिसाल (उस) दाने की सी है जिससे सात बालियां उठें (और फिर) हर बाली में सौ दाने हों (या'नी सात सौ गुना अन्न पाते हैं) और अल्लाह जिस के लिए चाहता है (उस से भी) इज़ाफ़ा फ़रमा देता है, और अल्लाह बड़ी वुस्ततवाला खूब जाननेवाला है।

262. जो लोग अल्लाह की राहमें अपने माल खर्च करते हैं फिर अपने खर्च किए हुए के पीछे न एहसान जतलाते हैं और न अज़ियत देते हैं उनके लिए उनके रब के पास उन का अन्न है और (रोज़े कियामत) उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वोह गुमगीन होंगे।

263. (साइल से) नरमी के साथ गुफ़्तगू करना और दर गुज़र करना उस सदके से कहीं बेहतर है जिस के बा'द (उसकी) दिल आज़ारी हो, और अल्लाह बेनियाज़ बड़ा हिल्मवाला है।

264. ऐ ईमानवालो ! अपने सदकात (बा'द अज़ां) एहसान जता कर और दुःख दे कर उस शख्स की तरह

قَالَ فَخُذْ أَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ
فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلَىٰ كُلِّ
جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ
يَأْتِيَنَّكَ سَعِيًّا ۗ وَاعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ
عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٦٠﴾

مَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي
سَبِيلِ اللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَتَتْت
سَبْعَ سَنَابِلٍ فِي كُلِّ سُنْبُلَةٍ مِّائَةٌ
حَبَّةٌ ۗ وَاللَّهُ يُضْعِفُ لِمَنْ يَشَاءُ
وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٦١﴾

الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي
سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُونَ مَا
انْفَقُوا مَنًّا وَلَا أَذًى ۗ لَّهُمْ أَجْرُهُمْ
عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا
هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٦٢﴾

قَوْلٌ مَّعْرُوفٌ وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ
صَدَقَةٍ يَتَّبِعُهَا أَذًى ۗ وَاللَّهُ غَنِيٌّ
حَلِيمٌ ﴿٢٦٣﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَبْطُلُوا
صَدَقَاتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْأَذَىٰ كَالَّذِي

बरबाद न कर लिया करो जो माल लोगों को दिखाने के लिए खर्च करता है और न अल्लाह पर ईमान रखता है और न रोज़े कियामत पर, उसकी मिसाल एक ऐसे चिकने पथर की सी है जिस पर थोड़ी सी मिट्टी पड़ी हो फिर उस पर जोरदार बारिश हो तो वोह उसे (फिर वोही) सख्त और साफ़ (पथर) कर के ही छोड़ दे, सो अपनी कमाई में से उन (रियाकारों) के हाथ कुछ भी नहीं आएगा, और अल्लाह काफ़िर कौम को हिदायत नहीं फ़रमाता।

265. और जो लोग अपने माल अल्लाह की रज़ा हासिल करने और अपने आपको (ईमानो इताअत पर) मज़बूत करने के लिए खर्च करते हैं उन की मिसाल एक ऐसे बाग़ की सी है जो ऊंची सतह पर हो उस पर जोरदार बारिश हो तो वोह दोगुना फल लाए और अगर उसे जोरदार बारिश न मिले तो (उसे) शबनम (या हलकी सी फुहार) भी काफ़ी हो, और अल्लाह तुम्हारे आ'माल को खूब देखनेवाला है।

266. क्या तुम में से कोई शख्स यह पसंद करेगा कि उस के पास खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो जिस के नीचे नहरें बेहती हों उसके लिए उसमें (खजूरों और अंगूरों के अलावा भी) हर किस्म के फल हों और (ऐसे वक़्त में) उसे बुढ़ापा आ पहुंचे और (अभी) उसकी औलाद भी ना तवां हो और (ऐसे वक़्त में) उस बाग़ पर एक बगोला आ जाए जिस में (निरी) आग हो और वोह बाग़ जल जाए (तो उसकी महरूमि और परेशानी का आलम क्या होगा), इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए निशानियां वाजेह तौर पर बयान फ़रमाता है ताकि तुम ग़ौर करो (सो क्या तुम चाहते हो कि आख़िरत में तुम्हारे आ'माल का बाग़ भी रियाकारी की आग में जल कर भस्म हो जाए और तुम्हें संभाला देने वाला भी कोई न हो)।

يُنْفِقُ مَالَهُ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ
بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ فَسَلُّهُ كَسَلٍ
صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَأَصَابَهُ وَابِلٌ
فَتَرَكَهُ صَلْدًا ۖ لَا يَقْدِرُونَ عَلَى
شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوا ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿٢٦٥﴾

وَمَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ
ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ
أَنْفُسِهِمْ كَسَلٍ ۖ جَنَّةٍ بِرَبْوَةٍ أَصَابَهَا
وَابِلٌ فَاتَتْهَا كَلِمًا ضَعْفَيْنِ ۚ فَإِن لَّمْ
يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلَّ ۗ وَاللَّهُ بِمَا
تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٦٦﴾

أَيُّوْدًا حَدِّكُمْ أَنْ تَكُونَ لَهُ جَنَّةٌ مِّنْ
مَّخِيلٍ ۖ وَأَعْنَابٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ ۖ لَهُ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۗ
وَأَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهُ ذُرِّيَةٌ ضَعْفَاءٌ ۗ
فَأَصَابَهَا إِعْصَارٌ فِيهِ نَارٌ
فَأُحْتَرَقَتْ ۗ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ
لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ﴿٢٦٦﴾

267. ऐ ईमानवालो ! उन पाकीजा कमाइयों में से और उस में से जो हमने तुम्हारे लिए ज़मीन से निकाला है (अल्लाह की राहमें) खर्च किया करो और उस में से गन्दे माल को (अल्लाह की राह में) खर्च करने का इरादा मत करो कि (अगर वोही तुम्हें दिया जाए तो) तुम खुद उसे हरगिज़ न लो सिवाए इसके कि तुम उसमें चश्म पोशी कर लो, और जान लो कि बेशक अल्लाह बेनियाज़ लाइके हर हम्द है।

268. शैतान तुम्हें (अल्लाह की राहमें खर्च करने से रोकने के लिए) तंग दस्ती का खौफ़ दिलाता है और बेहयाई का हुक्म देता है, और अल्लाह तुम से अपनी बख़्शाश और फ़ज़ल का वा'दा फ़रमाता है, और अल्लाह बहुत वुसूअत वाला ख़ूब जाननेवाला है।

269. जिसे चाहता है दानाई अ़ता फ़रमा देता है और जिसे (हिक्मतो) दानाई अ़ता की गई उसे बहुत बड़ी भलाई नसीब हो गई, और सिर्फ़ वोही लोग नसीहत हासिल करते हैं जो साहिबे अक्लो दानिश हैं।

270. और तुम जो कुछ भी खर्च करो या तुम जो मन्नत भी मानो तो अल्लाह उसे यकीनन जानता है, और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं।

271. अगर तुम ख़ैरात ज़ाहिर कर के दो तो येह भी अच्छा है (उस से दूसरों को तरगीब होगी) और अगर तुम उन्हें मुख़फ़ी रखो और वोह मोहताजों को पहुंचा दो तो येह तुम्हारे लिए (और) बेहतर है, और अल्लाह (उस ख़ैरात की वजह से) तुम्हारे कुछ गुनाहों को तुम से दूर फ़रमा देगा, और अल्लाह तुम्हारे आ'माल से बा ख़बर है।

272. उन को हिदायत देना आप का जिम्मे नहीं बल्कि

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِنْ
طَيِّبَاتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّا أَخْرَجْنَا
لَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ ۖ وَلَا تَيَسَّوْا
الْحَيٰثَ مِنْهُ تُنْفِقُونَ وَلَسْتُمْ
بِأَخْذِيهِ إِلَّا أَنْ تُغِضُوا فِيهِ ۗ

وَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ حَبِيدٌ ﴿٢٦٧﴾
الَّذِينَ يُعِدُّكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُمْ
بِالْفَحْشَاءِ ۗ وَاللَّهُ يَعِدُّكُمْ مَغْفِرَةً
مِّنْهُ وَفَضْلًا ۗ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٦٨﴾

يُؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَاءُ ۚ وَمَنْ يُؤْتِ
الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا ۗ وَمَا
يَدْرُسُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٢٦٩﴾

وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ نَّفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُمْ
مِّنْ نَّذْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُهُ ۗ وَمَا
لِالظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ﴿٢٧٠﴾

إِنْ تُبْدُوا الصَّدَقَاتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَإِنْ
تُخْفَوْهَا وَتُؤْتَوْهَا الْفُقَرَاءَ فَهِيَ خَيْرٌ
لَّكُمْ ۗ وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ مِّنْ سَيِّئَاتِكُمْ ۗ
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٢٧١﴾

لَيْسَ عَلَيْكَ هُدَاهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ

अल्लाह ही जिसे चाहता है हिदायत से नवाजता है, और तुम जो माल भी खर्च करो सो वोह तुम्हारे अपने फ़ाइदे में है और अल्लाह की रज़ा ज़ूई के सिवा तुम्हारा खर्च करना मुनासिब ही नहीं है, और तुम जो माल भी खर्च करोगे (उस का अज़्र) तुम्हें पूरा पूरा दिया जाएगा और तुम पर कोई जुल्म नहीं किया जाएगा।

273. (ख़ैरात) उन फुकरा का हक्क है जो अल्लाह की राह में (कसबे मआश से) रोक दिए गए हैं वोह (उमूरे दीन में हमा वक्त मशगूल रहने के बाइस) ज़मीन में चल फिर भी नहीं सकते उनके (जुहदन) तमा' से बाज़ रहने के बाइस नादान (जो उनके हाल से बेखबर हैं) उन्हें मालदार समझे हुए हैं, तुम उन्हें उन की सूरत से पहचान लोगे, वोह लोगों से बिल्कुल सवाल ही नहीं करते कि कहीं (मख़्लूक के सामने) गिड़गिड़ाना न पड़े, और तुम जो माल भी खर्च करो तो बेशक अल्लाह उसे ख़ूब जानता है।

274. जो लोग (अल्लाह की राहमें) शबो रोज़ अपने माल पोशीदह और ज़ाहिर खर्च करते हैं तो उनके लिए उनके रब के पास उनका अज़्र है और (रोज़े क़ियामत) उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वोह रंजीदह होंगे।

275. जो लोग सूद खाते हैं वोह (रोज़े क़ियामत) खड़े नहीं हो सकेंगे मगर जैसे वोह शख्स खड़ा होता है जिसे शैतान (आसेब) ने छू कर बद हवास कर दिया हो, येह इस लिए कि वोह केहते थे कि तिजारत (ख़रीदो फ़रोख़्त) भी तो सूद की मानिन्द है, हालांकि अल्लाहने तिजारत (सौदागरी) को हलाल फ़रमाया है और सूद को हराम

يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۖ وَمَا تُفْقُوا مِنْ
خَيْرٍ فَلَا نُفْسِكُمْ ۖ وَمَا تُفْقُونَ إِلَّا
ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللَّهِ ۖ وَمَا تُفْقُوا مِنْ خَيْرٍ
يُؤَيِّفُ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تظَلُمُونَ ﴿٢٧٣﴾
لِلْفُقَرَاءِ الَّذِينَ أُحْصِرُوا فِي
سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ ضَرْبًا فِي
الْأَرْضِ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ
أَغْنِيَاءَ مِنَ التَّعَفُّفِ ۚ تَعْرِفُهُمْ
بِسَيْلِهِمْ ۚ لَا يَسْأَلُونَ النَّاسَ
الْحَافِئًا ۖ وَمَا تُفْقُوا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ
اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ﴿٢٧٤﴾

الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ بِاللَّيْلِ
وَالنَّهَارِ سِرًّا وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ
أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يُحْزَنُونَ ﴿٢٧٥﴾
الَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبَا لَا يَقْوَمُونَ
إِلَّا كَمَا يَقُومُ الَّذِي يَتَخَبَّطُهُ
الشَّيْطَانُ مِنَ الْمَسِّ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ
قَالُوا إِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبَا ۗ
وَإَحْلَلَ اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبَا ۗ

किया है, पस जिस के पास उस के रब की जानिब से नसीहत पहुंची सो वोह (सूद से) बाज़ आ गया तो जो पहले गुज़र चुका वोह उसी का है, और उस का मुआमला अल्लाह के सुपुर्द है, और जिसने फिर भी लिया सो लोग जहन्नमी हैं, वोह उस में हमेशा रहेंगे।

276. और अल्लाह सूद को मिटाता है (या'नी सूदी माल से बरकत को ख़त्म करता है) और सदक़ात को बढ़ाता है (या'नी सदके के ज़रीए माल की बरकत को ज़ियादा करता है), और अल्लाह किसी भी ना सिपास ना फ़रमान को पसंद नहीं करता।

277. बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक आ'माल किए और नमाज़ काइम रखी और ज़कात देते रहे उन के लिए उन के रब के पास उन का अज़्र है, और उन पर (आख़िरत में) न कोई ख़ौफ़ होगा और न वोह रंजीदह होंगे।

278. ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और जो कुछ भी सूद में से बाकी रह गया है छोड़ दो अगर तुम (सिद्के दिल से) ईमान रखते हो।

279. फिर अगर तुम ने ऐसा न किया तो अल्लाह और उस के रसूल (ﷺ) की तरफ़ से ए'लाने जंग पर ख़बरदार हो जाओ और अगर तुम तौबा कर लो तो तुम्हारे लिए तुम्हारे अस्ल माल (जाइज़) हैं, न तुम खुद जुल्म करो और न तुम पर जुल्म किया जाए।

280. और अगर कर्जदार तंगदस्त हो तो खुशहाली तक मोहलत दी जानी चाहिए, और तुम्हारा (कर्ज को) मुआफ़

فَمَنْ جَاءَهُ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَبِّهِ
فَاتَّخَذَ لَهَا مَوَاسِقًا وَأَمْرًا إِلَى
اللَّهِ وَمَنْ عَادَ فَأُولَئِكَ أَصْحَابُ
النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٧٥﴾

يَذِقُ اللَّهُ الَّذِينَ لَبَّوْا وَيُرِي
الصَّدَاقَاتِ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ
كَفَّارٍ أَثِيمٍ ﴿٢٧٦﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ لَهُمْ
أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يُحْزَنُونَ ﴿٢٧٧﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ
وَذَرُوا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبَا إِن
كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٢٧٨﴾

فَإِن لَّمْ تَفْعَلُوا فَأْذَنُوا بِحَرْبٍ مِّنَ
اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِن تُبْتُمْ فَلَكُمْ
رُءُوسُ أَمْوَالِكُمْ لَا تَظْلِمُونَ وَلَا
تُظْلَمُونَ ﴿٢٧٩﴾

وَإِن كَانَ دُؤُوسٌ قَدِظَرَةٌ إِلَى
مَيْسَرَةٍ وَأَنْ تَصَدَّقُوا خَيْرٌ

कर देना तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम्हें मा'लूम हो (कि गरीब की दिलजूई अल्लाह की निगाह में क्या मुकाम रखती है)।

281. और उस दिन से डरो जिस में तुम अल्लाह की तरफ लौटाए जाओगे फिर हर शख्स को जो कुछ अमल उसने किया है उस की पूरी पूरी जज़ा दी जाएगी और उन पर जुल्म नहीं होगा।

282. ऐ ईमानवालो! जब तुम किसी मुकर्ररह मुदत तक के लिए आपस में कर्ज का मुआमला करो तो उसे लिख लिया करो, और तुम्हारे दरमियान जो लिखनेवाला हो उसे चाहिए कि इन्साफ़ के साथ लिखे और लिखनेवाला लिखने से इन्कार न करे जैसा कि उसे अल्लाह ने लिखना सिखाया है पस वोह लिख दे, (या'नी शरा' और मुलकी दस्तूर के मुताबिक वसीका नवीसी का हक्क पूरी दयानत से अदा करे) और मजमून वोह शख्स लिखवाए जिस के ज़िम्मे हक्क (या'नी कर्ज) हो और उसे चाहिए कि अल्लाह से डरे जो उस का परवरदिगार है और उस (ज़रे कर्ज) में से (लिखवाते वक़्त) कुछ भी कमी न करे, फिर अगर वोह शख्स जिस के ज़िम्मे हक्क वाजिब हुआ है ना समझ या ना तवां हो या खुद मजमून लिखवाने की सलाहियत न रखता हो तो उस के कारिन्दे को चाहिए कि वोह इन्साफ़ के साथ लिखवा दे, और अपने लोगों में से दो मर्दों को गवाह बना लो, फिर अगर दोनों मर्द मुयस्सर न हों तो एक मर्द और दो औरतें हों (येह) उन लोगों में से हों जिन्हें तुम गवाही के लिए पसंद करते हो (या'नी काबिले ए'तिमाद समझते हो) ताकि उन दो में से एक औरत भूल जाए तो उस एक को दूसरी याद दिला दे, और गवाहों को जब भी (गवाही के लिए) बुलाया जाए वोह इन्कार न करें, और मुआमला छोटा हो या बड़ा उसे अपनी मीआद तक लिख

لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٨٠﴾

وَاتَّقُوا يَوْمًا تُرْجَعُونَ فِيهِ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ تُوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٨١﴾
 يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَدَايَيْتُمْ بِدَيْنٍ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوهُ ۖ وَلْيَكْتُب بَيْنَكُمْ كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ ۚ وَلَا يَأْبَ كَاتِبٌ أَنْ يَكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللَّهُ فَلْيَكْتُبْ ۚ وَلْيُمْلِلِ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ وَلَا بِيَخْسٍ مِنْهُ شَيْءٌ ۖ فَاِنْ كَانَ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيهًا أَوْ ضَعِيفًا أَوْ لَا يَسْطِيعُ أَنْ يُبْلِلَ ۖ فَالْيُمْلِلْ وَلِيَّهُ بِالْعَدْلِ ۚ وَأَسْتَشْهِدُ وَاشْهَدْ بِدِينِ مَنْ رَجَا إِلَيْكُمْ ۚ فَإِنْ كُنْتُمْ يَكُونَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَامْرَأَتٌ مِّنْ تَرَضُونَ مِنَ الشُّهَدَاءِ ۖ أَنْ تَضِلَّ إِحْدَاهُمَا فَتُذَكَّرَ إِحْدَاهُمَا الْأُخْرَىٰ ۚ وَلَا يَأْبَ الشُّهَدَاءُ إِذَا

रखने में उक्ताया न करो, यह तुम्हारा दस्तावेज तैयार कर लेना अल्लाह के नजदीक ज़ियादा करीने इन्साफ़ है और गवाही के लिए मजबूत तर और यह उस के भी करीब तर है कि तुम शक में मुब्तिला न हो सिवाए इस के कि दस्त-ब-दस्त ऐसी तिजारत हो, जिस का लेन देन तुम आपस में करते रहते हो तो तुम पर उस के न लिखने का कोई गुनाह नहीं, और जब भी आपस में खरीदो फ़रोख़्त करो तो गवाह बना लिया करो, और न लिखनेवाले को नुक़सान पहुंचाया जाए और न गवाह को, और अगर तुमने ऐसा किया तो यह तुम्हारी हुक्म शिकनी होगी, और अल्लाह से डरते रहो, और अल्लाह तुम्हें (मुआमलात की) ता'लीम देता है और अल्लाह हर चीज़ का ख़ूब जाननेवाला है।

283. और अगर तुम सफ़र पर हो और कोई लिखने वाला न पाओ तो बा कब्ज़ा रहन रख लिया करो, फिर अगर तुम में से एक को दूसरे पर ए'तिमाद हो तो जिस की दयानत पर ए'तिमाद किया गया उसे चाहिए कि अपनी अमानत अदा कर दे और वोह अल्लाह से डरता रहे जो उस का पालनेवाला है, और तुम गवाही को छुपाया न करो, और जो शख़्स गवाही छुपाता है तो यकीनन उसका दिल गुनाहगार है, और अल्लाह तुम्हारे आ'माल को ख़ूब जानने वाला है।

284. जो कुछ आस्मानों में और जमीन में है सब अल्लाह के लिए है, वोह बातें जो तुम्हारे दिलों में हैं ख़्वाह उन्हें जाहिर करो या उन्हें छुपाओ अल्लाह तुम से उस का हिसाब

مَا دُعُوا وَلَا تَسْمُوا أَنْ تَكْتُبُوهُ
صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا إِلَىٰ أَجَلِهِ ۗ ذَلِكُمْ
أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ وَأَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ
وَأَدْنَىٰ أَلَّا تَرْتَابُوا إِلَّا أَنْ تَكُونَ
تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيرُونَهَا
بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَلَّا
تَكْتُبُوهَا ۗ وَأَشْهَدُوا إِذَا تَبَايَعْتُمْ
وَلَا يُضَارُّ كَاتِبٌ وَلَا شَهِيدٌ
وَإِنْ تَفْعَلُوا فَإِنَّهُ فُسُوقٌ بِكُمْ
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَيَعْلَمِ اللَّهُ وَاللَّهُ

بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٨٢﴾

وَإِنْ كُنْتُمْ عَلَىٰ سَفَرٍ وَلَمْ تَجِدُوا
كَاتِبًا فَرِهْنِ مَقْبُوضَةً ۖ فَإِنْ أَمِنَ
بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي
أُؤْتِنَ أَمَانَتَهُ وَيَلْتَقِ اللَّهَ رَبَّهُ ۗ
وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ۗ وَمَنْ يَكْتُمْهَا
فَأِنَّهُ إِثْمٌ قَلْبُهُ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ
عَلِيمٌ ﴿٢٨٣﴾

بِاللَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ
وَإِنْ تُبَدُّوا مَا فِيْ اَنْفُسِكُمْ اَوْ يُخْفَوْهُ

लेगा, फिर जिसे वोह चाहेगा बख़्शा देगा और जिसे चाहेगा अज़ाब देगा, और अल्लाह हर चीज़ पर कामिल कुदरत रखता है।

285. (वोह) रसूल (ﷺ) उस पर ईमान लाए (या'नी उस की तस्दीक़ की) जो कुछ उन पर उन के रब की तरफ़ से नाज़िल किया गया और अहले ईमान ने भी, सब ही (दिल से) अल्लाह पर और उस के फ़रिशतों पर और उस की किताबों पर और उस के रसूलों पर ईमान लाए, (नीज़ केहते हैं :) हम उस के पयगम्बरों में से किसी के दरम्यान भी (ईमान लाने में) फ़र्क नहीं करते, और (अल्लाह के हुज़ूर) अर्ज़ करते हैं : हमने (तेरा हुक्म) सुना और इताअत (कुबूल) की, ऐ हमारे रब ! हम तेरी बख़्शिश के तलबगार हैं और (हम सब को) तेरी ही तरफ़ लौटना है।

286. अल्लाह किसी जान को उस की ताक़त से बढ़ कर तकलीफ़ नहीं देता, उसने जो नेकी कमाई उस के लिए उसका अज़्र है और उसने जो गुनाह कमाया उस पर उस का अज़ाब है, ऐ हमारे रब ! अगर हम भूल जाएं या ख़ता कर बैठें तो हमारी गिरफ़्त न फ़रमा, ऐ हमारे परवरदिगार ! और हम पर इतना (भी) बोझ ना डाल जैसा तू ने हम से पहले लोगों पर डाला था, ऐ हमारे परवरदिगार ! और हम पर इतना बोझ (भी) ना डाल जिसे उठाने की हम में ताक़त नहीं, और हमारे (गुनाहों) से दर गुज़र फ़रमा, और हमें बख़्श दे, और हम पर रहम फ़रमा, तू ही हमारा कारसाज़ है पस हमें काफ़िरों की क़ौम पर ग़लबा अ़ता फ़रमा।

يَحَاسِبُكُمْ بِهِ اللَّهُ ۖ فَيَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ

عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٨٥﴾

أَمَّنَ الرَّسُولَ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ ۗ كُلُّ مَن بَالِغٍ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ لَا نُفِرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهِ ۗ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۗ غُفْرَانَكَ

رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ﴿٢٨٥﴾

لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۗ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ۗ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِن نَّسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا ۗ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إَصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا ۗ رَبَّنَا وَلَا تُحِثْ عَلَيْنَا مَا لَا طَاقَةَ

لَنَا بِهِ ۗ وَاعْفُ عَنَّا ۗ وَاعْفِرْ لَنَا ۗ وَأَنْتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا

عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٢٨٦﴾

आयातुहा 200 3 सूरतु आले इमरान म-दनिय्यतुन 89 रुकूआतुहा 20

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

1. अलिफ लाम मीम (हकीकी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)।

الْم ۱

2. अल्लाह, उसके सिवा कोई लाइके इबादत नहीं (वोह) हमेशा जिन्दा रहने वाला है (सारे आलम को अपनी तदबीर से) काइम रखनेवाला है।

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ۲

3. (ऐ हबीब!) उसीने (येह) किताब आप पर हक़ के साथ नाज़िल फ़रमाई है (येह) उन (सब किताबों) की तस्दीक करनेवाली है जो इससे पहले उतरी हैं और उसीने तौरात और इन्ज़ील नाज़िल फ़रमाई है।

نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَنزَلَ التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ ۳

4. (जैसे) इससे कबल लोगों की रहनुमाई के लिए (किताबें उतारी गई) और (अब उसी तरह) उसने हक़ और बातिल में इम्तियाज़ करनेवाला (कुआन) नाज़िल फ़रमाया है, बेशक जो लोग अल्लाह की आयतोंका इन्कार करते हैं उनके लिए संगीन अज़ाब है, और अल्लाह बड़ा ग़ालिब इन्तिकाम लेनेवाला है।

مَنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَأَنزَلَ الْفُرْقَانَ ۚ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۣ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ۣ

5. यकीनन अल्लाह पर ज़मीन और आस्मान की कोई भी चीज़ मुख़फ़ी नहीं।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْفَىٰ عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ۵

6. वोही है जो (मांओं के) रहमों में तुम्हारी सूरतें जिस तरह चाहता है बनाता है, उसके सिवा कोई लाइके परस्तिश नहीं (वोह) बड़ा ग़ालिब बड़ी हिक़मतवाला है।

هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۶

7. वोही है जिसने आप पर किताब नाज़िल फ़रमाई जिसमें से कुछ आयतें मोहक़म (या'नी ज़ाहिरन भी साफ़

هُوَ الَّذِي أَنزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ آيَاتٌ مُحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ

और वाजेह मा'ना रखनेवाली) हैं वोही (अहकाम) किताब की बुन्याद हैं और दूसरी आयतें मु-तशाबह (या'नी मा'ना में कई एहतिमाल और इशितबाह रखने वाली) हैं सो वोह लोग जिनके दिलोंमें कजी है उसमें से सिर्फ मु-तशाबेहात की पैरवी करते हैं (फकत) फ़िल्ना परवरी की ख़्वाहिश के ज़ेरे असर और अस्ल मुराद की बजाए मन पसंद मा'ना मुराद लेने की गरज़ से, और उसकी अस्ल मुरादको अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता, और इल्ममें कामिल पुख़्तगी रखनेवाले केहते हैं कि हम उस पर ईमान लाए, सारी (किताब) हमारे रब की तरफ़ से उतरी है, और नसीहत सिर्फ़ अहले दानिश को ही नसीब होती है।

8. (और अर्ज़ करते हैं) ऐ हमारे रब! हमारे दिलों में कजी पैदा न कर इसके बाद कि तूने हमें हिदायत से सरफ़राज़ फ़रमाया है और हमें ख़ास अपनी तरफ़से रहमत अता फ़रमा, बेशक तू ही बहुत अता फ़रमाने वाला है।

9. ऐ हमारे रब! बेशक तू उस दिन कि जिसमें कोई शक नहीं सब लोगों को जमा' फ़रमाने वाला है, यकीनन अल्लाह (अपने) वा'दे के ख़िलाफ़ नहीं करता।

10. बेशक जिन्होंने कुफ़्र किया न उनके माल उन्हें अल्लाह (के अज़ाब) से कुछ भी बचा सकेंगे और न उनकी औलाद, और वोही लोग दोख़ का ईधन हैं।

11. (उनका भी) कौमे फ़िरऔन और उनसे पहली कौमों जैसा तरीका है, जिन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया तो अल्लाह ने उनके गुनाहों के बाइस उन्हें पकड़ लिया, और अल्लाह सख़्त अज़ाब देनेवाला है।

الْكِتَابِ وَأُخْرٌ مُّتَشَبِهَاتٌ فَأَمَّا
الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ
مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ
وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ
إِلَّا اللَّهُ وَالرَّسُخُونَ فِي الْعِلْمِ
يَقُولُونَ امْتَابِهِمْ كُلٌّ مِنْ عِنْدِ
رَبِّنَا وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو
الْأَلْبَابِ ﴿٧﴾

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ
هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ
رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿٨﴾
رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَا
رَيْبَ فِيهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ
الْعَيْعَادَ ﴿٩﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ
أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ
شَيْئًا وَأُولَئِكَ هُمْ وَقُودُ النَّارِ ﴿١٠﴾
كَذَّابِ الْفِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ
مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَاللَّهُ
شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿١١﴾

12. काफ़िरों से फ़रमा दें : तुम अ़नक़रीब मग़लूब हो जाओगे और जहन्नम की तरफ़ हांके जाओगे, और वोह बहुत ही बुरा ठिकाना है!

13. बेशक तुम्हारे लिए उन दो जमाअतों में एक निशानी है (जो मैदाने बद्र में) आपसमें मुक़ाबिल हुई, एक जमाअतने अल्लाह की राहमें जंग की और दूसरी काफ़िर थी वोह उन्हें (अपनी) आँखों से अपने से दोगुना देख रहे थे, और अल्लाह अपनी मदद के ज़रीए जिसे चाहता है तक्वियत देता है, यकीनन इस वाक़िए में आँखवालों के लिए (बड़ी) इब्रत है।

14. लोगों के लिए उन ख़्वाहिशात की मुहब्बत (ख़ूब) आरास्ता कर दी गई है (जिन में) औरतें और औलाद और सोने और चांदी के जमा' किए हुए ख़ज़ाने और निशान किए हुए ख़ूबसूरत घोड़े और मवेशी और खेती (शामिल हैं), येह (सब) दुन्यवी ज़िन्दगी का सामान है, और अल्लाह के पास बेहतर ठिकाना है।

15. (ऐ हबीब!) आप फ़रमा दें : क्या मैं तुम्हें उन सबसे बेहतरीन चीज़ की ख़बर दूँ? (हाँ) परहेज़गारों के लिए उनके रब के पास (ऐसी) जन्नतें हैं जिनके नीचे नेहरें बेहती हैं वोह उनमें हमेशा रहेंगे (उनके लिए) पाकीज़ा बीवियाँ होंगी और (सबसे बड़ी बात येह कि) अल्लाह की तरफ़ से खुशनुदी नसीब होगी, और अल्लाह बंदों को ख़ूब देखनेवाला है।

قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا سَعْتُونَ
وَتُحْشَرُونَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ ۗ وَبِئْسَ

الْبِهَادُ ۝۱۲

قَدْ كَانَ لَكُمْ آيَةٌ فِي فِتْنَتَيْ
الَّتَقَاتِ ۗ فَمَنْ تَقَاتَلَ فِي سَبِيلِ
اللَّهِ وَأُخْرَىٰ كَافِرَةٌ يَرَوْنَهُمْ
مِثْلِهِمْ رَأَىٰ الْعَيْنُ ۗ وَاللَّهُ يُؤَيِّدُ
بِنَصْرِهِ مَن يَشَاءُ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ
لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ۝۱۳

زِينٍ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوَاتِ مِنَ
النِّسَاءِ وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرِ الْمُقَنْطَرَةِ
مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ
السُّومَةِ وَالْأَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ۗ ذَٰلِكَ
مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۗ وَاللَّهُ عِنْدَهُ
حُسْنُ الْبَابِ ۝۱۴

قُلْ أَوْفَيْتُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذَٰلِكُمْ ۗ
لِلَّذِينَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ
فِيهَا وَأَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ
مِّنَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ۝۱۵

16. (येह वोह लोग हैं) जो केहते हैं : ऐ हमारे रब ! हम यकीनन ईमान ले आए हैं सो हमारे गुनाह मुआफ़ फ़रमा दे और हमें दोख़ के अज़ाब से बचा ले।

الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا إِنَّا أَمْنَا
فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَقِنَا عَذَابَ
النَّارِ ﴿٦﴾

17. (येह लोग) सब्र करने वाले हैं और कौलो अमल में सच्चाई वाले हैं और अदबो इताअत में झुकने वाले हैं और अल्लाह की राह में खर्च करने वाले हैं और रात के पिछले पहर (उठ कर) अल्लाह से मुआफ़ी मांगने वाले हैं।

الصَّابِرِينَ وَالصَّادِقِينَ وَالْقَاتِلِينَ
الْبُفْقِينَ وَالسُّتَغْفِرِينَ بِالْأَسْحَارِ ﴿٧﴾

18. अल्लाहने इस बात पर गवाही दी कि उसके सिवा कोई लाइके इबादत नहीं और फ़रिश्तों ने और इल्मवालों ने भी (और साथ येह भी) कि वोह हर तदबीरे अदल के साथ फ़रमानेवाला है, उस के सिवा कोई लाइके परस्तिश नहीं वोही ग़ालिब हिक्मतवाला है।

شَهِدَ اللَّهُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
وَالْمَلَائِكَةُ وَأُولُو الْعِلْمِ قَائِمًا
بِالْقِسْطِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ ﴿٨﴾

19. बेशक दीन अल्लाह के नज़दीक इस्लाम ही है और अहले किताबने जो अपने पास इल्म आ जाने के बाद इख़िलाफ़ किया वोह सिर्फ़ बाहमी हसदो इनाद के बाइस था, और जो कोई अल्लाह की आयतों का इन्कार करे तो बेशक अल्लाह हि़साब में जल्दी फ़रमाने वाला है।

إِنَّ الدِّينَ عِنْدَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ قَدْ
وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِينَ أُوْتُوا الْكِتَابَ
إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ
بِعَيَابِهِمْ وَمَنْ يَكْفُرْ بِآيَاتِ اللَّهِ
فَإِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٩﴾

20. (ऐ हबीब!) अगर फिर भी आपसे झगड़ा करें तो फ़रमा दें कि मैंने और जिसने (भी) मेरी पैरवी की अपना रूए नियाज़ अल्लाह के हुज़ूर झुका दिया है, और आप अहले किताब और अनपढ़ लोगों से फ़रमा दें : क्या तुम भी अल्लाह के हुज़ूर झुकते हो (या'नी इस्लाम कुबूल करते हो) ? फिर अगर वोह फ़रमां बरदारी इख़्तियार कर लें तो वोह हकीकतन हिदायत पा गए, और अगर मुँह फेर लें तो

فَإِنْ حَاجُّوكَ فَقُلْ أَسَلَمْتُ
وَجْهِيَ لِلَّهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ط وَقُلْ
لِلَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْأُمِّيِّينَ
ءَأَسَلْتُمْ ط فَإِنْ أَسَلُوا فَقَدْ
اهْتَدَوْا وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا

आपके जिम्मे फ़क़त हुक्म पहुंचा देना ही है, और अल्लाह बन्दों को ख़ूब देखनेवाला है।

21. यक़ीनन जो लोग अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं और अंबिया को नाहक़ क़त्ल करते हैं और लोगो में से भी उन्हें क़त्ल करते हैं जो अदलो इन्साफ़ का हुक्म देते हैं सो आप उन्हें दर्दनाक अज़ाब की ख़बर सुना दें।

22. येह वोह लोग हैं जिनके आ'माल दुनिया और आख़िरत (दोनों) में ग़ारत हो गए और उनका कोई मददगार नहीं होगा।

23. क्या आपने उन लोगो को नहीं देखा जिन्हें (इल्म) किताब में से एक हिस्सा दिया गया वोह किताबे इलाही की तरफ़ बुलाए जाते हैं ताकि वोह (किताब) उन के दरमियान (निज़ाआत का) फ़ैसला कर दे तो फिर उन में से एक तब्का मुँह फेर लेता है और वोह रू गर्दानी करने वाले ही हैं।

24. येह (रू गर्दानी की जुअत) इस लिए कि वोह केहते हैं कि हमें गिन्ती के चंद दिनों के सिवा दोज़ख़ की आग मस नहीं करेगी, और वोह (अल्लाह पर) जो बोहतान बांधते रेहते हैं उसने उनको अपने दीन के बारे में फ़रेब में मुब्तिला कर दिया है।

25. सो क्या हाल होगा जब हम उनको उस दिन जिस (के बपा होने) में कोई शक नहीं जमा' करेंगे, और जिस जानने जो कुछ भी (आ'माल में से) कमाया होगा उसे

عَلَيْكَ الْبَدْعُ وَاللَّهُ بِصِيرٍ
بِالْعِبَادِ ٢٠

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ
وَيَقْتُلُونَ النَّبِيْنَ بَغْيٍ حَقٍّ
وَيَقْتُلُونَ الَّذِينَ يَأْمُرُونَ
بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ فَبَشِّرْهُمْ

بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ٢١

أُولَئِكَ الَّذِينَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي
الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِنْ

نَصْرٍ ٢٢

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا
مِّنَ الْكِتَابِ يُدْعَوْنَ إِلَى كِتَابِ
اللَّهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلَّى فَرِيقٌ

مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُونَ ٢٣

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَنْ تَسْسِنَا النَّارُ
إِلَّا أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ وَغَرَّهُمْ

فِي دِينِهِمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ٢٤

فَكَيْفَ إِذَا جَمَعْنَاهُمْ لِيَوْمِ لَا
رَيْبَ فِيهِ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ

उसका पूरा पूरा बदला दिया जाएगा और उन पर कोई जुल्म नहीं किया जाएगा।

26. (ऐ हबीब! यूं) अर्ज कीजिए: ऐ अल्लाह! सलतनत के मालिक! तू जिसे चाहे सलतनत अता फ़रमा दे और जिस से चाहे सलतनत छीन ले और तू जिसे चाहे इज़्ज़त अता फ़रमा दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे, सारी भलाई तेरे ही दस्ते कुदरत में है, बेशक तू ही हर चीज़ पर बड़ी कुदरत वाला है।

27. तू ही रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में दाखिल करता है और तू ही ज़िन्दह को मुर्दह से निकालता है और मुर्दह को ज़िन्दह से निकालता और जिसे चाहता है बिग़ैर हिसाब के (अपनी नवाज़िशात से) बेहरह अन्दोज़ करता है।

28. मुसलमानों को चाहिए कि अहले ईमान को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त ना बनाएं और जो कोई ऐसा करेगा उसके लिए अल्लाह (की दोस्ती में) से कुछ नहीं होगा सिवाए इसके कि तुम उन (के शर) से बचना चाहो, और अल्लाह तुम्हें अपनी ज़ात (के ग़ज़ब) से डराता है, और अल्लाह ही की तरफ़ लौट कर जाना है।

29. आप फ़रमा दें कि जो तुम्हारे सीनों में है ख़्वाह तुम उसे छुपाओ या उसे ज़ाहिर कर दो अल्लाह उसे जानता है, और जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है वोह ख़ूब जानता है, और अल्लाह हर चीज़ पर बड़ा कादिर है।

مَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٥﴾

قُلِ اللَّهُمَّ مَلِكُ الْمَلِكِ تُوتِي الْمَلِكَ مَنْ تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمَلِكَ مِمَّنْ تَشَاءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَاءُ وَتُزِلُّ مَنْ تَشَاءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ط

إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٦﴾

تُوَلِّجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُوَلِّجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ن

وَتَنْزُقُ مَنْ تَشَاءُ بِعَبْرِ حَسَابٍ ﴿٢٧﴾

لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُونَ الْكُفْرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ع

وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللَّهِ فِي شَيْءٍ إِلَّا أَنْ تَتَّقُوا مِنْهُمْ تُقَاةً ط وَيَحْذَرُكُمْ اللَّهُ نَفْسَهُ ط

وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ﴿٢٨﴾

قُلْ إِنْ تَحْفُوا مَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ بُدُّوا يَعْلَمُهُ اللَّهُ ط وَيَعْلَمُ مَا فِي السُّبُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ط وَاللَّهُ

عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٩﴾

30. जिस दिन हर जान हर उस नेकी को भी (अपने सामने) हाज़िर पा लेगी जो उसने की थी और हर बुराई को भी जो उसने की थी तो वोह आरजू करेगी काश! मेरे और उस बुराई (या उस दिन) के दरमियान बहुत ज़ियादा फ़ासला होता, और अल्लाह तुम्हें अपनी ज़ात (के ग़ज़ब) से डराता है, और अल्लाह बन्दों पर बहुत महरबान है।

31. (ऐ हबीब!) आप फ़रमा दें : अगर तुम अल्लाह से महबूब करते हो तो मेरी पैरवी करो तब अल्लाह तुम्हें (अपना) महबूब बना लेगा और तुम्हारे लिए तुम्हारे गुनाह मुआफ़ फ़रमा देगा, और अल्लाह निहायत बख़्शाने वाला महरबान है।

32. आप फ़रमा दें कि अल्लाह और रसूल (ﷺ) की इताअत करो फिर अगर वोह रू गर्दानी करें तो अल्लाह काफ़िरो को पसंद नहीं करता।

33. बेशक अल्लाह ने आदम (ﷺ) को और नूह (ﷺ) को और आले इब्राहीम को और आले इमरान को सब ज़हान वालों पर (बुजुर्गी में) मुन्तख़ब फ़रमा लिया।

34. येह एक ही नस्ल है उनमें से बा'ज़ बा'ज़ की औलाद हैं, और अल्लाह ख़ूब सुननेवाला ख़ूब जानने वाला है।

35. और (याद करें) जब इमरान की बीवी ने अर्ज़ किया : ऐ मेरे रब! जो मेरे पेटमें है मैं उसे (दीगर ज़िम्मेदारियों से) आज़ाद कर के ख़ालिस तेरी नज़र करती हूँ सो तू मेरी तरफ़ से (येह नज़राना) कुबूल फ़रमा ले, बेशक तू ख़ूब सुनने ख़ूब जाननेवाला है।

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ
خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۗ وَ مَّا عَمِلَتْ مِنْ
سُوءٍ ۗ تَوَدُّ لَوْ أَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهُ أَمَدًا
بَعِيدًا ۗ وَيَحْذَرُكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ ۗ
وَاللَّهُ سَرِيعٌ بِالْعِبَادِ ۚ

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ
فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ
ذُنُوبَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝
قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ ۚ فَإِنْ
تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ
الْكَافِرِينَ ۝

إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ آدَمَ وَنُوحًا وَ
آلَ إِبْرَاهِيمَ وَالْأَلِ عِمْرَانَ عَلَى
الْعَالَمِينَ ۝

ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ ۗ وَاللَّهُ
سَبِيحٌ عَلَيْهِمُ ۝

إِذْ قَالَتِ امْرَأَتُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي
نَدَرْتُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا
فَتَقَبَّلْ مِنِّي ۚ إِنَّكَ أَنْتَ السَّيِّعُ
الْعَلِيمُ ۝

36. फिर जब उसने लड़की जनी तो अर्ज करने लगी : मौला! मैंने तो येह लड़की जनी है, हालांकि जो कुछ उसने जना था अल्लाह उसे खूब जानता था, (वोह बोली) और लड़का (जो मैंने मांगा था) हरगिज़ इस लड़की जैसा नहीं (हो सकता) था (जो अल्लाह ने अता की है), और मैंने इसका नाम ही मरयम (इबादत गुज़ार) रख दिया है और बेशक मैं इसको और इसकी औलाद को शैतान मरदूद (के शर) से तेरी पनाह में देती हूँ।

37. सो उसके रबने उस (मरयम) को अच्छी कुबूलियत के साथ कुबूल फ़रमा लिया और उसे अच्छी परवरिश के साथ परवान चढ़ाया और उसकी निगेहबानी ज़करिय्या (ﷺ) के सुपुर्द कर दी जब भी ज़करिय्या (ﷺ) उसके पास इबादतगाह में दाख़िल होते तो वोह उसके पास (नई से नई) खानेकी चीज़ें मौजूद पाते उन्हों ने पूछा : ऐ मरयम! येह चीज़ें तुम्हारे लिए कहां से आती हैं? उसने कहा : येह रिज़्क अल्लाह के पास से आता है, बेशक अल्लाह जिसे चाहता है बे हिसाब रिज़्क अता करता है।

38. उसी जगह ज़करिय्या (ﷺ) ने अपने रब से दुआ की, अर्ज किया : मेरे मौला! मुझे अपनी जनाब से पाकीज़ा औलाद अता फ़रमा, बेशक तू ही दुआ का सुनने वाला है।

39. अभी वोह हुजरे में खड़े नमाज़ ही पढ़ रहे थे (या दुआ ही कर रहे थे) कि उन्हें फ़रिश्तों ने आवाज़ दी : बेशक अल्लाह आपको (फ़रजंद) यह्या (ﷺ) की बशारत देता है जो कलि-मतुल्लाह(या'नी ईसा (ﷺ) की तस्दीक करने वाला होगा और सरदार होगा और औरतों (की रग़बत) से बहुत महफूज़ होगा और (हमारे) खास

فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ اِنِّي
وَضَعْتُهَا اُنْثَىٰ ۗ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا
وَضَعْتُ ۗ وَلَيْسَ الذَّكَرُ
كَالْاُنْثَىٰ ۗ وَاِنِّي سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ
وَإِنِّي اَعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ
الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٣٦﴾

فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ
وَآتٰنَهَا نَبَاًا حَسَنًا ۗ وَكَفَّلَهَا
زَكَرِيَّا ۗ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا
الْمِحْرَابَ ۗ وَجَدَ عِنْدَهَا رِازِقًا
قَالَ لِيَرْيِمُ اَنِّي لَكَ هٰذَا ۗ قَالَتْ
هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ
مَنْ يَّشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٧﴾

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ ۗ قَالَ
رَبِّ هَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً
طَيِّبَةً ۗ اِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاۗءِ ﴿٣٨﴾
فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّيُ
فِي الْمِحْرَابِ ۗ اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ
بِيَحْيٰى مُصَدِّقًا لِّمَا بَكَرْتَهُ مِنَ اللّٰهِ
وَسَيِّدًا وَحَصُوْرًا وَّ نَبِيًّا ۗ وَمِنَ

नेकूकार बंदों में से नबी होगा।

40. (जकरिय्या عليه السلام ने) अर्ज किया : ऐ मेरे रब! मेरे हां लडका कैसे होगा? दर आं हाली कि मुझे बुदापा पहुंच चुका है और मेरी बीवी (भी) बांझ है, फरमाया : इसी तरह अल्लाह जो चाहता है करता है।

41. अर्ज किया : ऐ मेरे रब! मेरे लिए कोई निशानी मुकरर फरमा, फरमाया : तुम्हारे लिए निशानी यह है कि तुम तीन दिन तक लोगों से सिवाए इशारे के बात नहीं कर सकोगे, और अपने रब को कसरत से याद करो और शाम और सुबह उसकी तस्बीह करते रहो।

42. और जब फरिश्तों ने कहा : ऐ मरयम! बेशक अल्लाह ने तुम्हें मुन्तख़ब कर लिया है और तुम्हें पाकीज़गी अता की है और तुम्हें आज सारे जहान की औरतों पर बरगुज़ीदह कर दिया है।

43. ऐ मरयम! तुम अपने रब की बड़ी अज़िज़ीसे बंदगी बजा लाती रहो और सज्दा करो और रुकूअ करनेवालों के साथ रुकूअ किया करो।

44. (ऐ महबूब!) यह ग़ैब की ख़बरें हैं जो हम आपकी तरफ़ वही फरमाते हैं, हालांकि आप (उस वक़्त) उनके पास न थे जब वोह (कुर्अह अंदाज़ी के तौर पर) अपने क़लम फेंक रहे थे कि उन में से कौन मरयम की कफ़ालत करे और न आप उस वक़्त उनके पास थे जब वोह आपसमें झगड़ रहे थे।

45. जब फरिश्तों ने कहा : ऐ मरयम! बेशक अल्लाह तुम्हें अपने पास से एक कलि-मए (खास) की बशारत देता है,

الصّٰلِحِيْنَ ۝۳۹

قَالَ رَبِّ اَنْىٰ يَكُوْنُ لىٰ عُلْمٌ وَّوَقَدْ
بَلَغَنِى الْكِبَرُ وَاَمْرًا تىٰ عَاقِرٌ قَالَ
كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ۝۴۰

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لىٰ اٰيَةً ۝ قَالَ
اٰيَتِكَ اِلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلَاثَةَ
اَيَّامٍ اِلَّا رَمَزًا ۝ وَاذْكُرْ رَبَّكَ
كَثِيْرًا وَّسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَاَلْبٰكِرِ ۝۴۱

وَ اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ لىٰرِىْمُ اِنَّ
اللّٰهَ اصْطَفٰكِ وَطَهَّرَكِ وَاَصْطَفٰكِ
عَلٰى نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ ۝۴۲

لِىٰرِىْمٍ اَقْنَتِىْ لِرَبِّكِ وَاَسْجُدِىْ
وَ اِرْكَعِىْ مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ۝۴۳

ذٰلِكَ مِنْ اَنْبَآءِ الْعٰبِىِّ نُوْحِىْهِ
اِلَيْكَ ۝ وَاَمَّا كُنْتِ لَدَيْهِمْ اِذْ
يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اِلَيْهِمْ يَكْفُلُ
مَرِىْمَ ۝ وَاَمَّا كُنْتِ لَدَيْهِمْ اِذْ

يَخْتَصِمُوْنَ ۝۴۴

اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ لىٰرِىْمُ اِنَّ اللّٰهَ
يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۝ اَسْمُهُ

जिस का नाम मसीह ईसा बिन मरयम (ﷺ) होगा वोह दुनिया और आखिरत (दोनों) में कद्रो मन्ज़िलत वाला होगा और अल्लाह के खास कुर्बत याफ़ता बन्दों में से होगा।

46. और वोह लोगों से गेहवारे में और पुख़्ता उम्र में (यक्सां) गुफ्तुगू करेगा और वोह (अल्लाह के) नेकू कार बन्दों में से होगा।

47. (मरयम ﷺ ने) अर्ज किया : ऐ मेरे रब! मेरे हां कैसे लडका होगा दर आं हाली कि मुझे तो किसी शख्सने हाथ तक नहीं लगाया, इर्शाद हुआ इसी तरह अल्लाह जो चाहता है पैदा फ़रमाता है, जब किसी काम (के करने) का फ़ैसला फ़रमा लेता है तो उससे फ़क़त इतना फ़रमाता है 'हो जा' वोह हो जाता है।

48. और अल्लाह उसे किताब और हिकमत और तौरात और इन्ज़ील (सब कुछ) सिखाएगा।

49. और वोह बनी इसराईल की तरफ़ रसूल होगा (उनसे कहेगा) कि बेशक मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की जानिब से एक निशानी ले कर आया हूँ मैं तुम्हारे लिए मिट्टीसे परिन्दे की शक़ल जैसा (एक पुतला) बनाता हूँ फिर मैं उसमें फूंक मारता हूँ सो वोह अल्लाह के हुक्म से फ़ौरन उड़ने वाला परिन्दह हो जाता है और मैं मादरज़ाद अंधे और सफ़ेद दाग़वाले को शिफ़ाय़ाब करता हूँ और मैं अल्लाह के हुक्म से मुर्दे को ज़िन्दह कर देता हूँ, और जो कुछ तुम खा कर आए हो जो कुछ तुम अपने घरों मे जमा' करते हो मैं तुम्हें (वोह सब कुछ) बता देता हूँ, बेशक इसमें तुम्हारे लिए निशानी है अगर तुम ईमान रखते हो।

50. और मैं अपने से पहले उतरी हुई (किताब) तौरात

الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِبِّهَا فِي
الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَنْ الْمُقَرَّبِينَ ۝۳۵

وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا
وَمِنَ الصّٰلِحِينَ ۝۳۶

قَالَتْ رَبِّ اَنْى يَكُوْنُ لى وَلَدٌ وَّ لَمْ
يَمْسَسْنى بَشْرٌ ۗ قَالَ كَذٰلِكَ اَللّٰهُ
يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۗ اِذَا قَضٰى اَمْرًا
فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهُ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝۳۷

وَيُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰتَ
وَالْاِنْجِيْلَ ۝۳۸

وَرَسُوْلًا اِلَىٰ بَنِي إِسْرٰءِيْلَ ۗ اِنّى
قَدْ جِئْتُكُمْ بِاٰیٰتٍ مِّنْ رَبِّكُمْ ۗ اِنّى
اَخْلَقْتُ لَكُمْ مِّنَ الطَّيْرِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ
فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِ
اَللّٰهِ ۗ وَابْرِئى الْاَكْمَةَ وَالْاَبْرَصَ
وَاحِى السُّوْىِۦ بِاِذْنِ اَللّٰهِ ۗ وَانْبِئْتُكُمْ
بِهَآءِ تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ ۗ فِى
بُيُوْتِكُمْ ۗ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَآیٰةً لِّكُمْ اِنْ
كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝۳۹

وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيِّ مِنْ

की तस्दीक करने वाला हूँ और यह इस लिए कि तुम्हारी खातिर बा'ज ऐसी चीजें हलाल कर दूँ जो तुम पर हराम कर दी गई थीं और तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफसे निशानी ले कर आया हूँ सो अल्लाह से डरो और मेरी इताअत इख्तियार कर लो।

51. बेशक अल्लाह मेरा रब है और तुम्हारा भी (वोही) रब है पस उसकी इबादत करो, येही सीधा रास्ता है।

52. फिर जब ईसा (ﷺ) ने उनका कुफ़्र महसूस किया तो उसने कहा : अल्लाह की तरफ कौन लोग मेरे मददगार हैं? तो उसके मुखलिस साथियोंने अर्ज किया : हम अल्लाह (के दीन) के मददगार हैं, हम अल्लाह पर ईमान लाए हैं और आप गवाह रहें कि हम यकीनन मुसलमान हैं।

53. ऐ हमारे रब! हम उस किताब पर ईमान लाए जो तूने नाज़िल फ़रमाई और हमने इस रसूल की इतिबाअ की सो हमें (हक़ की) गवाही देने वालों के साथ लिख ले।

54. फिर (यहूदी) काफ़िरों ने (ईसा ﷺ के क़त्ल के लिए) खुफ़या साज़िश की और अल्लाह ने (ईसा ﷺ को बचाने के लिए) मुखफ़ी तदबीर फ़रमाई, और अल्लाह सबसे बेहतर मुखफ़ी तदबीर फ़रमानेवाला है।

55. जब अल्लाहने फ़रमाया : ऐ ईसा ! बेशक मैं तुम्हें पूरी उम्र तक पहुंचानेवाला हूँ और तुम्हें अपनी तरफ़ (आस्मान पर) उठानेवाला हूँ और तुम्हें काफ़िरों से नजात दिलाने वाला हूँ और तुम्हारे पैरोकारों को (उन) काफ़िरों पर क़ियामत तक बरतरी देनवाला हूँ, फिर तुम्हें मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है सो जिन बातों में तुम झगड़ते थे मैं

التَّوَارِثَةِ وَلَا جِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِي
حُرِّمَ عَلَيْكُمْ وَجِئْتُكُمْ بِآيَةٍ مِّنْ
رَّبِّكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ٥٠

إِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ٥١
هَذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ٥١

فَلَمَّا أَحَسَّ عِيسَى مِنْهُمُ الْكُفْرَ
قَالَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ ٥٢ قَالَ
الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ ٥٢ أَمَّا
بِاللَّهِ ٥٢ وَاشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ٥٢
رَبَّنَا ٥٢ أَمَّا بِهَا أَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا
الرَّسُولَ ٥٢ فَكُتِبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ٥٢

وَمَكَرُوا وَمَكَرَ اللَّهُ ٥٣ وَاللَّهُ خَيْرٌ
الْمُكْرِمِينَ ٥٣

إِذْ قَالَ اللَّهُ لِيَعِيسَى ابْنِي مَرْيَمَ
وَرَأَيْكَ إِلَىٰ وَمُطَهَّرِكَ مِنَ
الَّذِينَ كَفَرُوا وَجَاعِلِ الَّذِينَ
اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ
يَوْمِ الْقِيَامَةِ ٥٤ ثُمَّ إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ

तुम्हारे दरमियान उनका फ़ैसला कर दूंगा।

56. फिर जो लोग काफ़िर हुए उन्हें दुनिया और आख़िरत (दोनों में) सख़्त अज़ाब दूंगा और उनका कोई मददगार न होगा।

57. और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए तो (अल्लाह) उन्हें उनका भरपूर अज़्र देगा, और ज़ालिमों को पसंद नहीं करता।

58. येह जो हम आपको पढ़ कर सुनाते हैं (येह) निशानियां हैं और हिकमतवाली नसीहत है।

59. बेशक ईसा (ﷺ) की मिसाल अल्लाह के नज़दीक आदम (ﷺ) की सी है, जिसे उसने मिट्टी से बनाया फिर फ़रमाया 'हो जा' वोह हो गया।

60. (उम्मत की तंबीह के लिए फ़रमाया) येह तुम्हारे रब की तरफ़ से हक्क है पस शक करने वालों में से न हो जाना।

61. पस आपके पास इल्म आ जाने के बाद जो शख़्स ईसा (ﷺ) के मुआमले में आपसे झगड़ा करे तो आप फ़रमा दें कि आ जाओ हम (मिल कर) अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को और अपनी औरतों को और तुम्हारी औरतों को और अपने आपको भी और तुम्हें भी (एक जगह पर) बुला लेते हैं, फिर हम मुबाहिला (या'नी गिड़गिड़ा कर दुआ) करते हैं। और झूटों पर अल्लाह की

فَأَحْكُم بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ
تَخْتَلِفُونَ ﴿٥٥﴾

فَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَأَعَذِّبُهُمْ
عَذَابًا شَدِيدًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ
وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ﴿٥٦﴾

وَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ
وَاللَّهُ لَا يَحِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿٥٧﴾

ذَلِكَ نَتْلُوهُ عَلَيْكَ مِنَ الْآيَاتِ
وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ ﴿٥٨﴾

إِنَّ مَثَلَ عِيسَىٰ عِنْدَ اللَّهِ كَمَثَلِ
آدَمَ ۖ خَلَقَهُ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ
لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٥٩﴾

الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُن مِّنَ
الْمُتَرَدِّينَ ﴿٦٠﴾

فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِن بَعْدِ مَا
جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ
أَبْنَاءَنَا وَابْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا
وَنِسَاءَكُمْ وَأَنْفُسَنَا وَأَنْفُسَكُمْ ۗ ثُمَّ
نَبْتَهِلْ فَنَجْعَل لَّعْنَتَ اللَّهِ عَلَىٰ

ला'नत भेजते हैं।

62. बेशक येही सच्चा बयान है, और कोई भी अल्लाह के सिवा लाइके इबादत नहीं, और बेशक अल्लाह ही तो बड़ा गालिब हिक्मतवाला है।

63. फिर अगर वोह लोग रू गर्दानी करें तो यकीनन अल्लाह फ़साद करनेवालों को ख़ूब जानता है।

64. आप फ़रमा दें : ऐ अहले किताब ! तुम इस बात की तरफ़ आ जाओ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान यकसां है, (वोह येह) कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत नहीं करेंगे और हम उसके साथ किसीको शरीक नहीं ठेहराएंगे और हममें से कोई एक-दूसरे को अल्लाह के सिवा रब नहीं बनाएगा, फिर अगर वोह रू गर्दानी करें तो केह दो कि गवाह हो जाओ कि हम तो अल्लाह के ताबेए फ़रमान (मुसलमान) हैं।

65. ऐ अहले किताब! तुम इब्राहीम (عليه السلام) के बारे में क्यों झगड़ते हो (या'नी उन्हें यहूदी या नसरानी क्यों ठेहराते हो) हालांकि तौरात और इन्जील (जिन पर तुम्हारे दोनों मज़हबोंकी बुनियाद है) तो नाज़िल ही उनके बाद की गई थीं, क्या तुम (इतनी भी) अक्ल नहीं रखते।

66. सुन लो ! तुम वोही लोग हो जो उन बातों में भी झगड़ते रहे हो जिनका तुम्हें (कुछ न कुछ) इल्म था मगर उन बातों में क्यों तकरार करते हो जिनका तुम्हें (सिरे से) कोई इल्म ही नहीं, और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।

الْكَذِبِينَ ﴿٦١﴾

إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ
وَمَا مِنْ إِلَهٍ إِلَّا اللَّهُ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ

لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦٢﴾

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ عَلَيْهِمْ
بِالْفُسَادِ بَازٍ ﴿٦٣﴾

قُلْ يَا هَلْ أَكْتَبِ تَعَالَوْا إِلَى
كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا
نَعْبُدَ إِلَّا اللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا
وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا
مِّنْ دُونِ اللَّهِ ۗ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُولُوا

أَشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ﴿٦٤﴾

يَا هَلْ أَكْتَبِ لِمَ تُحَاجُّونَ فِي
إِبْرَاهِيمَ وَمَا أُنزِلَتِ التَّوْرَةُ
وَالْإِنْجِيلَ إِلَّا مِنْ بَعْدِهِ ۗ أَفَلَا

تَعْقِلُونَ ﴿٦٥﴾

هَآأَنْتُمْ هَؤُلَاءِ حَآجَجْتُمْ فِيبَا
نَكُمْ بِهِ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَآجُّونَ فِيبَا
لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ

وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٦﴾

67. इब्राहीम (عليه السلام) ना यहूदी थे और न नसरानी वोह हर बातिल से जुदा रेहने वाले (सच्चे) मुसलमान थे, और वोह मुशरिकों में से भी न थे।

68. बेशक सब लोगों से बढ़ कर इब्राहीम (عليه السلام) के करीब (और हक्कदार) तो वोही लोग हैं जिन्होंने उन (के दीन) की पैरवी की है और (वोह) येही नबी (ﷺ) और (उन पर) ईमान लाने वाले हैं, और अल्लाह ईमान वालों का मददगार है।

69. (ऐ मुसलमानो!) अहले किताब में से एक गिरोह तो (शदीद) ख्वाहिश रखता है कि काश वोह तुम्हें गुमराह कर सकें, मगर वोह अपने आप ही को गुमराही में मुब्तिला किए हुए हैं और उन्हें (इस बात का) शक़र नहीं।

70. ऐ अहले किताब! तुम अल्लाह की आयतों का इन्कार क्यों कर रहे हो हालांकि तुम खुद गवाह हो (या'नी तुम अपनी किताबों में सब कुछ पढ़ चुके हो)।

71. ऐ अहले किताब! तुम हक्क को बातिल के साथ क्यों खलत मलत करते हो और हक्क को क्यों छुपाते हो हालांकि तुम जानते हो।

72. और अहले किताब का एक गिरोह (लोगों से) केहता है कि तुम इस किताब (कुआन) पर जो मुसलमानों पर नाज़िल की गई है दिन चढ़े (या'नी सुब्द) ईमान लाया करो और शाम को इन्कार कर दिया करो ताकि (तुम्हें देख कर) वोह भी बर गश्ता हो जाएं।

73. और किसी की बात न मानो सिवाय उस शख्स के जो

مَا كَانَ إِبْرَاهِيمَ يَهُودِيًّا وَلَا
نَصْرَانِيًّا وَلَكِنْ كَانَ حَنِيفًا مُسْلِمًا
وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٦٧﴾

إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لَلَّذِينَ
اتَّبَعُوهُ وَهَذَا النَّبِيُّ وَالَّذِينَ
آمَنُوا وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٨﴾

وَدَّتْ طَائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ
لَو يُضَلُّوكُمْ وَمَا يُضَلُّونَ إِلَّا
أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٦٩﴾

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ
اللَّهِ وَأَنْتُمْ تَشْهَدُونَ ﴿٧٠﴾

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَتَّبِعُونَ الْحَقَّ
بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَأَنْتُمْ
تَعْلَمُونَ ﴿٧١﴾

وَقَالَتْ طَائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ
آمِنُوا بِالَّذِي أُنزِلَ عَلَيَّ الَّذِينَ
آمَنُوا وَجَهَ النَّهَارِ وَكَفَرُوا الْآخِرَةَ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٧٢﴾

وَلَا تَتَّبِعُوا إِلَّا لِسَانَ تَبَعٍ دِينِكُمْ

तुम्हारे (ही) दिन का पैरव हो, फ़रमा दें कि बेशक हिदायत तो (फ़क़त) हिदायते इलाही है (और अपने लोगों से मज़ीद केहते हैं कि येह भी हरगिज़ न मानना) कि जैसी किताब (या दीन) तुम्हें दिया गया उस जैसा किसी और को भी दिया जाएगा या येह कि कोई तुम्हारे रब के पास तुम्हारे खिलाफ़ हुज्जत ला सकेगा, फ़रमा दें: बेशक फ़ज़ल तो अल्लाह के हाथ में है, जिसे चाहता है अता फ़रमाता है, और अल्लाह वुस्तवाला बड़े इल्म वाला है।

74. वोह जिसे चाहता है अपनी रहमत के साथ ख़ास फ़रमा लेता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़लवाला है।

75. और अहले किताब में ऐसे भी हैं अगर आप उसके पास माल का ढेर अमानत रख दें तो वोह आपको लौटा देगा और उन्हीं में ऐसे भी हैं कि अगर उसके पास एक दीनार अमानत रख दें तो आपको वोह भी नहीं लौटाएगा सिवाए इसके कि आप उसके सर पर खड़े रहें, येह इस लिए कि वोह केहते हैं कि अनपढ़ों के मुआमले में हम पर कोई मुआखेज़ा नहीं, और अल्लाह पर झूट बांधते हैं और उन्हें खुद भी मा'लूम है।

76. हां जो अपना वा'दा पूरा करे और तक्वा इख़्तियार करे (उस पर वाकई कोई मुआखेज़ा नहीं) सो बेशक अल्लाह परहेज़गारों से मुहब्बत फ़रमाता है।

77. बेशक जो लोग अल्लाह के अहद और अपनी क़स्मों का थोड़ी सी क़ीमत के इवज़ सौदा कर देते हैं येही वोह लोग हैं जिन के लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं और न क़ियामत के दिन अल्लाह उनसे कलाम फ़रमाएगा और न ही उनकी तरफ़ निगाह फ़रमाएगा और न उन्हें पाकीज़गी

قُلْ إِنَّ الْهُدَىٰ هُدَىٰ اللَّهِ لَا أَنْ يُؤْتَىٰ أَحَدٌ مِّثْلَ مَا أُوتِيْتُمْ أَوْ يُحَاجُّوْكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ قُلْ إِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَّشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٤٣﴾

يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَنْ يَّشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٤٣﴾

وَمِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مَنْ إِنْ تَأْمَنَهُ بِقِطَارٍ يُؤَدِّيْكَ إِلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَنْ إِنْ تَأْمَنَهُ بِدِينَارٍ يُؤَدِّيْكَ إِلَيْكَ إِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَائِمًا ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْأُمِّيْنِ سَبِيْلٌ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكُذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٤٥﴾

بَلَىٰ مَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ وَاتَّقَىٰ فَإِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ السَّقِيْنِ ﴿٤٦﴾

إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيْلًا أُولَٰئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

देगा और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब होगा।

78. और बेशक उन में एक गिरोह ऐसा भी है जो किताब पढ़ते हुए अपनी ज़बानों को मरोड़ लेते हैं ताकि तुम उनकी उलट फेर को भी किताब (का हिस्सा) समझो हालां कि वोह किताब में से नहीं है, और केहते हैं : येह (सब) अल्लाह की तरफ़ से है और वोह (हरगिज़) अल्लाह की तरफ़ से नहीं है, और वोह अल्लाह पर झूट गढ़ते हैं और (येह) उन्हें खुद भी मा'लूम है।

79. किसी बशर को येह हक्क नहीं कि अल्लाह उसे किताब और हिकमत और नुबुव्वत अता फ़रमाए फिर वोह लोगों से येह केहने लगे कि तुम अल्लाह को छोड़ कर मेरे बंदे बन जाओ बल्कि (वोह तो येह कहेगा) तुम अल्लाहवाले बन जाओ इस सबब से कि तुम किताब सिखाते हो और इस वजह से कि तुम खुद उसे पढ़ते भी हो।

80. और वोह पयगम्बर तुम्हें येह हुक्म कभी नहीं देता कि तुम फ़रिश्तों और पयगम्बरों को रब बना लो, क्या वोह तुम्हारे मुसलमान हो जाने के बाद (अब) तुम्हें कुफ़्र का हुक्म देगा ?

81. और (ऐ महबूब! वोह वक़्त याद करें) जब अल्लाहने अंबिया से पुख़्ता अहद लिया कि जब मैं तुम्हें किताब और हिकमत अता कर दूँ फिर तुम्हारे पास वोह (सब पर अज़मतवाला) रसूल ﷺ तशरीफ़ लाए जो उन किताबों की तस्दीक़ फ़रमाने वाला हो जो तुम्हारे साथ होंगी तो ज़रूर बिज़-ज़रूर उन पर ईमान लाओगे और ज़रूर

وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤٤﴾
وَإِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيقًا يَلْوَنَ
الْسِنْتَهُمْ بِالْكِتَابِ لِتَحْسَبُوهُ مِنَ
الْكِتَابِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتَابِ
وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا
هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۗ وَيَقُولُونَ عَلَى

اللَّهِ الْكُذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٤٥﴾
مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُؤْتِيَهُ اللَّهُ
الْكِتَابَ وَالْحِكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ
يَقُولَ لِلنَّاسِ كُونُوا عِبَادًا لِي مِنْ
دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ كُونُوا رَبَّانِيِّينَ
بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُونَ الْكِتَابَ وَبِمَا
كُنْتُمْ تُدْرَسُونَ ﴿٤٦﴾

وَلَا يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلَائِكَةَ
وَالنَّبِيِّينَ أَرْبَابًا أَيَأْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ
بَعْدَ إِذْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ﴿٤٧﴾

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّينَ
لَمَّا أْتَيْتُكُمْ مِنْ كِتَابٍ وَحِكْمَةٍ
ثُمَّ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مُصَدِّقٌ لِمَا
مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ وَلَتَنْصُرُنَّهُ ۗ

बिज़-ज़रूर उनकी मदद करोगे, फ़रमाया : क्या तुम ने इकरार किया और इस (शर्त) पर मेरा भारी अहद मज़बूती से थाम लिया ? सब ने अर्ज़ किया : हमने इकरार कर लिया, फ़रमाया कि तुम गवाह हो जाओ और मैं भी तुम्हारे साथ गवाहों में से हूँ।

82. (अब पूरी नस्ले आदम के लिए तंबीहन फ़रमाया) फिर जिसने उस (इकरार) के बाद रू गर्दानी की पस वोही लोग ना फ़रमान होंगे।

83. क्या येह अल्लाह के दीन के सिवा कोई और दीन चाहते हैं और जो कोई भी आस्मानों और ज़मीन में है उसने खुशी से या लाचारी से (बहर हाल) उसी की फ़रमां बरदारी इख़्तियार की है और सब उसी की तरफ़ लौटाए जाएंगे।

84. आप फ़रमाएं : हम अल्लाह पर ईमान लाए हैं और जो कुछ हम पर उतारा गया है और जो कुछ इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और या'कूब (عليهم السلام) और उनकी औलाद पर उतारा गया है और जो कुछ मूसा और ईसा और जुमला अंबिया (عليهم السلام) को उन के रब की तरफ़ से अता किया गया है (सब पर ईमान लाए हैं), हम उनमें से किसी पर भी ईमान में फ़र्क नहीं करते और हम उसी के ताबेए फ़रमान हैं।

85. और जो कोई इस्लाम के सिवा किसी और दीन को चाहेगा तो वोह उस से हरगिज़ कबूल नहीं किया जाएगा, और वोह आख़िरत में नुक्सान उठानेवालों में से होगा।

86. अल्लाह उन लोगों को क्यों कर हिदायत फ़रमाए जो ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गये हालां कि वोह इस अम्र

قَالَ عَاقِرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ عَلَىٰ
ذِكْمِ إِصْرِي قَالُوا أَقْرَرْنَا
قَالَ فَاشْهَدُوا وَأَنَا مَعَكُمْ مِنَ

الشَّاهِدِينَ ﴿٨١﴾

فَمَنْ تَوَلَّىٰ بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ
الْفَاسِقُونَ ﴿٨٢﴾

أَفَعَيِّرْ دِينَ اللَّهِ يَبْغُونَ وَلَئِذَا
أَسْلَمَ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
طَوْعًا وَكَرْهًا وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ﴿٨٣﴾

قُلْ أَمَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ عَلَيْنَا
وَمَا أُنزِلَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ
وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْإِسْبَاطِ وَمَا
أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَالنَّبِيِّينَ مِنْ
سَرَابِهِمْ ۖ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ
مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿٨٤﴾

وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا
فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ
مِنَ الْخَسِرِينَ ﴿٨٥﴾

كَيْفَ يَهْدِي اللَّهُ تَوْمًا كَفَرُوا
بَعْدَ إِيمَانِهِمْ وَشَهِدُوا أَنَّ

की गवाही दे चुके थे कि यह रसूल सच्चा है और उनके पास वाज़ेह निशानियां भी आ चुकी थीं, और अल्लाह ज़ालिम कौम को हिदायत नहीं फ़रमाता।

87. ऐसे लोगों की सजा यह है कि उन पर अल्लाह की और फ़रिश्तों की और तमाम इन्सानों की ला'नत पड़ती रहे।

88. वोह इस फिटकार में हमेशा (गिरफ़्तार) रहेंगे और उनसे इस अज़ाब में कमी नहीं की जाएगी और न उन्हें मोहलत दी जाएगी।

89. सिवाए उन लोगों के जिन्होंने उस के बाद तौबा कर ली और (अपनी) इस्लाह कर ली, तो बेशक अल्लाह बख़्शानेवाला महरबान है।

90. बेशक जिन लोगों ने अपने ईमान के बाद कुफ़र किया फिर वोह कुफ़र में बढ़ते गए उनकी तौबा हरगिज़ कुबूल नहीं की जाएगी, और वोही लोग गुमराह हैं।

91. बेशक जो लोग काफ़िर हुए और हालते कुफ़र में ही मर गए सो उन में से कोई शख़्स अगर ज़मीन भर सोना भी (अपनी नजात के लिए) मुआवज़े में देना चाहे तो उस से हरगिज़ कुबूल नहीं किया जाएगा, उन्हीं लोगों के लिए दर्दनाक अज़ाब है और उन का कोई मददगार नहीं हो सकेगा।

الرَّسُولَ حَقًّا وَجَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ٨٦
أُولَئِكَ جَزَاءُ وَّهُمْ أَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ
اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ٨٧
خُلْدًا فِيهَا لَا يَخَفُّ عَنْهُمْ
الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يَنْظُرُونَ ٨٨

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ
وَأَصْلَحُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ
رَّحِيمٌ ٨٩

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ
شُمُّ أَرْدَادُوا كُفْرًا لَنْ تُقْبَلَ
تَوْبَتُهُمْ وَأُولَئِكَ هُمُ الضَّالُّونَ ٩٠
إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ
كُفَّارًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْ أَحَدِهِمْ
مِلءُ الْأَرْضِ ذَهَبًا وَلَوْ افْتَدَى
بِهِ ٩١ أُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ وَمَا
لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ٩٢